वेदों का सिंहासन, सनातन की दिव्यता का ध्वजवाहक

बेंगलुरू एयरपोर्ट से पूर्वाह्न 11 बजे टैक्सी द्वारा हमने श्रृंगेरी की यात्रा आरंभ की। रास्ते में बेलूर में रुककर प्राचीन चेन्नाकेशव मंदिर में दर्शन के बाद हमारा अगला पड़ाव हिरेमगलूर था। यह जगह कोडंडाराम मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। इस मंदिर में श्रीराम, सीता, लक्ष्मण को विवाह जुलूस के रूप में दर्शाया गया है। आखिरकार 320 किमी की दूरी करीब आठ घंटे में तय करके शाम सात बजे हम श्रृंगेरी में थे। यह कर्नाटक के चिकमंगलूर जिला का एक तालुका है। श्रृंगेरी का इतिहास रामायण काल से भी पुराना है। महर्षि ऋष्यश्रृंग के निवास और कठोर तपस्या के कारण यह स्थान उनके नाम से जाना गया। ऋषि ऋष्यश्रृंग ने राजा दशरथ के लिए पुत्रकामेष्टि संस्कार संपन्न कराया था, जिसके बाद प्रभु श्रीराम और उनके भाइयों का जन्म हुआ। श्रृंगेरी की पवित्रता ने जगद्गुरु आदि शंकराचार्य को अपनी अद्भुत अंतर्दृष्टि से आकर्षित किया था। यहां उन्होंने सनातन धर्म की पवित्र परंपरा को बढ़ावा देने के लिए 12 शताब्दी से भी पहले चार आम्नाय पीठों में से प्रथम पीठ की स्थापना की थी। अद्वैत वेदांत के प्रसार हेतु संस्था की स्थापना के लिए पवित्र स्थान की खोज में श्रृंगेरी पहुंचने पर आदि शंकराचार्य ने पवित्र तुंगा नदी के तट पर एक अद्भुत दृश्य देखा, एक नाग प्रसव पीड़ा से कराह रहे एक मेढक को छाया प्रदान करने के लिए अपना फन फैलाकर उसे दोपहर की तपती धूप से बचा रहा था। प्राकृतिक प्रतिकूलताओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने वाली यह घटना देखकर उन्हें लगा कि यह स्थान अवश्य ही पवित्र है। इसी के बाद पहले मठ की स्थापना के लिए उन्होंने श्रृंगेरी को चुना।

शारदम्बा मंदिर व पीठम के बीच से बहती तुंग नदी

- श्रृंगेरी नगर का अस्तित्व शारदम्बा मंदिर एवं श्रृंगेरी शारदा पीठम से है जिनकी स्थापना आदि शंकराचार्य ने आठवीं शताब्दी में की थी। इन दोनों के मध्य से तुंग नदी बहती है। छोटे से श्रृंगेरी नगर में 40 से अधिक मंदिर हैं। लेकिन सबसे प्रसिद्ध शारदा शक्तिपीठम और विद्याशंकर मंदिर हैं। यहां हमने एक ऊंचे राज गोपुरम अथवा गोपुर से शारदम्बा मंदिर के भीतर प्रवेश किया। 2014 में निर्मित यह राज गोपुरम इस प्राचीन मंदिर के इतिहास में एक नवीन कड़ी है। शारदा देवी श्रृंगेरी की प्रमुख पीठासीन देवी हैं। कहा जाता है कि जब आदिशंकर कश्मीर में कुछ समय व्यतीत कर वापस आये थे, तब वे शारदा देवी को वहां से श्रृंगेरी लाये थे। मंदिर के भीतर शारदा देवी एक माला हाथ में लिए एक चक्र पर आरूढ़ हैं। शारदा देवी की मूल प्रतिमा चन्दन काष्ठ में बनी है। स्वर्ण में निर्मित वर्तमान प्रतिमा संत विद्यारण्य द्वारा 14वीं सदी में स्थापित की गयी थी।
- संत विद्यारण्य श्रृंगेरी मठ के बारहवें शंकराचार्य थे। विजयनगर साम्राज्य की स्थापना में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। शारदम्बा यहां देवी सरस्वती का प्रतिनिधित्व करती है। यहां देवी को मंडन मिश्र की पत्नी उभय भारती का अवतार भी मानते हैं। ये वही देवी भारती हैं जिनका आदि शंकराचार्य के साथ शास्त्रार्थ प्रसिद्ध है। लगभग 100 वर्ष पूर्व तक सम्पूर्ण मंदिर चंदन की लकड़ी का बना था। किन्तु एक अग्निकांड में जल गया था। अब जो मंदिर यहां है वह अग्निकांड के पश्चात द्रविड़ पद्धति से पुनर्निर्मित है।

श्रृंगेरी शारदा पीठम

12 राशियों के लिए 12 स्तंभ सूर्य की पड़ती पहली किरण

मंडप के मध्य स्थित गोलाकार आकार की ग्रेनाइट शिला पर तिरछी रेखाएं उत्कीर्णित हैं। मंदिर का निर्माण करते समय इन रेखाओं का प्रयोग कर स्तंभों के सटीक स्थान की गणना की गयी होगी।

पुरातत्व की दृष्टि से विद्याशंकर मंदिर श्रृंगेरी का सर्वाधिक आकर्षक मंदिर है। यहां कुल 12 स्तंभ हैं जो 12 राशियों के प्रतीक हैं। जब सूर्य एक राशि से दूसरी में प्रवेश करता है तब उसकी प्रथम किरणें उस राशि के प्रतीकात्मक स्तंभ पर गिरती हैं। मंडप के मध्य स्थित गोलाकार आकार की ग्रेनाइट शिला पर तिरछी रेखाएं उत्कीर्णित हैं। मंदिर का निर्माण करते समय इन रेखाओं का प्रयोग कर स्तंभों के सटीक स्थान की गणना की गयी होगी। गर्भगृह के भीतर काली शिला में एक बड़ा शिवलिंग है। इसे विद्याशंकर लिंग कहा जाता है। शिवलिंग के बाईं ओर विद्या गणपति की काले पत्थर की प्रतिमा है। दायीं ओर दुर्गा के रूप में देवी की प्रतिमा है। सूर्योदय की किरणें सीधे विद्याशंकर लिंग पर पड़ती हैं।

विद्याशंकर मंदिर में 6 पंथों के भगवान की प्रतिमाएं

14वीं शताब्दी में जब हम्पी में विजयनगर साम्राज्य था, उस समय गुरु विद्याशंकर के लिए विद्याशंकर मंदिर बनवाया गया था। एक ऊंचे मंच पर स्थापित यह आयताकार मंदिर है। मंदिर की बाह्य भित्तियों पर उत्कीर्णित प्रतिमाएं आदि शंकराचार्य द्वारा परिभाषित 6 पंथों के भगवान की हैं। ये 6 पंथ हैं, शिव, विष्णु, षन्मुख, देवी, गणेश एवं सूर्य। आदि शंकराचार्य मंदिर, शारदम्बा मन्दिर के पीछे छोटा किन्तु सुन्दर मंदिर है। यह आदि शंकराचार्य को समर्पित है। मंदिर की बाहरी भित्तियों पर उनकी जीवनी पर आधारित मनमोहक चित्र हैं।

चारों दिशाओं में स्थापित हैं मंदिर

आदि शंकराचार्य ने श्रृंगेरी की चार दिशाओं में चार छोटे मंदिरों की स्थापना की थी। पश्चिम में केरे आंजनेय मंदिर, पूर्व में काल भैरव, दक्षिण में दुर्गाम्बा तथा उत्तर में कालिकाम्बा मंदिर है। यहां शारदा पीठम के वर्तमान शंकराचार्य वंशावली में 36 वें क्रमांक पर आते हैं। श्रृंगेरी शारदा पीठम में अधिकतर पूर्व शंकराचार्यों की समाधियां हैं। गुरु निवास विशाल कक्ष है, जहां शंकराचार्य भक्तों को दर्शन देते हैं।

कैसे पहुंचे

विमान से जाने पर मंगलुरू इंटरनेशनल एयरपोर्ट करीब 105 किमी दूर है। निकटतम रेलवे स्टेशन लगभग 80 किमी दूरी पर उडुपी है। चिकमंगलूर से सड़क मार्ग से दूरी 100 किमी है। बेंगलुरू, मैसूर और उडुपी से नियमित बस सेवाएं उपलब्ध हैं।

लेखक – अजय त्रिवेदी
उपनिदेशक, युवा कल्याण विभाग

अंधेरों को मिल रही रोशनी यहां से

कानपुर का कृष्णा नगर बना नेत्रदानियों की नगरी, मरणोपरांत 219 नेत्रदान से 438 लोगों की जिंदगी में हुआ उजाला

देश के बंटवारे के बाद पाकिस्तान के डेरावल से आए पंजाबी बिरादरी के लोगों ने वर्ष 1948 में कानपुर में जीटी रोड के किनारे कृष्णा नगर नामक मोहल्ला बसाया था। आज इस इलाके की पहचान रक्तदान के बाद नेत्रदान नगरी के रूप में होती है। यहां के 219 लोगों द्वारा मरणोपरांत किए गए नेत्रदान से अंधता के शिकार 438 लोगों का जीवन रोशन हो चुका है। इस काम के सूत्रधार और प्रेरक पूर्व पार्षद मदन लाल भाटिया के अनुसार पूरे मोहल्ले में जीते-जीते रक्तदान, जाते-जाते नेत्रदान अब ध्येय वाक्य बन चुका है।

मदन लाल बताते हैं कि उत्साही और ऊर्जावान युवाओं को जोड़कर श्री नागर जी सेवादल संगठन बनाया। गरीब परिवारों की बेटियों की शादी कराने का बीड़ा उठाया। इसी दौरान एक ऐसी घटना हुई जिसने उद्देश्य ही बदल दिया। क्षेत्र के एक परिवार को सड़क हादसे के बाद बड़ी मात्रा में रक्त की आवश्यकता पड़ी। लेकिन कुछ परिवारों ने रक्त देने से इनकार कर दिया। तभी फैसला लिया कि रक्त की कमी से किसी जीवन की क्षति नहीं होने देनी है। मेडिकल कॉलेज एवं इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की टीम बुलाकर इलाके के युवाओं एवं बेटियों के रक्त ग्रुप की जांच कराकर उन्हें रक्तदान के लिए प्रेरित किया। कुछ ही समय में रक्तदानियों की बड़ी टोली तैयार हो गई। इसके बाद नेत्रदान की प्रेरणा मिली। जब भी इलाके में किसी का देहांत होता तो उसके परिवार को मृतक का नेत्रदान कराने के लिए प्रेरित करना शुरू किया। कृष्णा नगर में पहला नेत्रदान वर्ष 2006 में बलदेव राज भाटिया की पत्नी सीता देवी का हुआ। उनके कॉर्निया से दो लोगों को रोशनी मिली। परिवार की सराहना हुई, फिर क्या था नेत्रदान संकल्प पत्र भरने के लिए लोग तेजी से आने लगे। पंजाबियों की परंपरा के अनुसार मरणोपरांत चौथे एवं उठाले की बैठक में नेत्रदाता परिवार को सम्मानित किया जाने लगा। अब तो नेत्रदान की सूचना मिलते ही मेडिकल कॉलेज की टीम आकर मृतक के दोनों कॉर्निया सुरक्षित करती है।

लेखक – मदन लाल भाटिया पूर्व पार्षद एवं समाजसेवी

81 साल में भी कैनवास के कुशल चितेरे

कला जीवंत है। बचपन में मां से ऐसी प्रेरणा मिली कि जीवन को कला के लिए समर्पित कर दिया और आज भी बच्चों और बड़ों के जीवन में रंग भर रहे हैं, 1995-96 में राष्ट्रपति पुरस्कार से पुरस्कृत चित्रकार डॉ. महेंद्र कुमार सक्सेना। उनके शब्दों में बचपन में कला के प्रति सजगता देख मां बसंती देवी मुझसे जन्माष्टमी, करवाचौथ, भइया दूज, अहोई अष्टमी के चित्र दीवारों पर बनवाकर पूजा करती थीं। यहीं से कला में रुचि बढ़ी और पहली शिक्षिका मां बनीं। इसके बाद बड़े भाई चित्रकार सुरेन्द्र कुमार सक्सेना से कला की बारीकियां सीखीं। दीपिका चित्रकला केंद्र से कला की शिक्षा ग्रहण करने के बाद बरेली से लेकर नैनीताल, देहरादून तक कला के रंग बिखेरे। पेशेवर कला की शुरुआत गुरु जगदीश आर्य के साथ नैनीताल के माल रोड पर लोगों के स्केच बनाकर हुई। लीलावती पंत राजकीय इंटर कॉलेज, भीमताल में कला अध्यापक के बाद राजकीय इंटर कॉलेज गंगोलीहाट, (पिथौरागढ़) पहुंचा। ज्वालामुखी, हरिद्वार में राजकीय दीक्षा विद्यालय में शिक्षण कार्य के बाद बरेली के मनोहर भूषण इंटर कॉलेज आया तो प्रबंध समिति के लोगों ने मुझसे कहा, अपनी पेंटिंग दिखाओ। इस पर मैंने जवाब दिया, पेंटिंग तो किसी से बनवाकर ला सकता हूं। यहीं पर कुछ बनवा लीजिए। दो मिनट में स्केच बना दिया। कला अध्यापक के रूप में नियुक्ति होने पर ड्राइंग एवं पेंटिंग में एमए की डिग्री ली। इसके बाद अपने गुरु प्रो. रणवीर सक्सेना एवं डॉ. सरला रमण अध्यक्ष, चित्रकला विभाग डीएवी कॉलेज देहरादून के सानिध्य में हेमवती नंदा बहुगुणा विश्व विद्यालय से डाक्टरेट की उपाधि ली। 1974 में उप्र कला परिषद का गठन हुआ। इसमें छात्र-छात्राओं को होनहार कलाकार बनाने के लिए बड़े स्तर पर प्रतियोगिता कराने पर तत्कालीन मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी से सराहना मिली।

लेखक – डॉ महेंद्र कुमार सक्सेना

- **प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 34 पोट्रेट की प्रदर्शनी :** वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर उनके जीवन के बाल्यकाल से लेकर अभी तक के पोट्रेट की सीरीज में 34 चित्र बनाए हैं, जिनकी प्रदर्शनी लगाने की तैयारी है।
- **स्केच बनाकर हर नेता से ऑटोग्राफ लिए :** इंदिरा गांधी, एचडी देवगौड़ा, राजनाथ सिंह, हेमवती नंदन बहुगुणा, कमलापति त्रिपाठी, केसी पंत, सुचेता कृपलानी, मोरार जी देसाई, वीरेंद्र सिंह, लक्ष्मी शंकर यादव, जगदीश शरण अग्रवाल, जग जीवन राम के स्केच बनाए और उनके ऑटोग्राफ भी लिए।
- **275 मीटर लंबी पेंटिंग पर मिला राष्ट्रपति पुरस्कार :** वर्ष 1994-95 में 14 दिन-रात परिश्रम करके 275 मीटर लंबी पेंटिंग बनाई। विषय था 'आजादी के बाद से अब तक शिक्षकों का इतिहास'। इस पेंटिंग पर 1995-96 में राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया।

... मेरी मां से मिला दो मुझे

12 साल के बच्चे की पीड़ा भरी ममता की पुकार ने शीर्ष अदालत को अपना फैसला बदलने के लिए किया बाध्य

मां... मेरी मां... मुझे तुमको देखना है। मैं तुम्हारे पास आना चाहता हूं। तुम्हारे बिना मैं बहुत अकेला हूं, कभी-कभी डर जाता हूं। ...मां मुझे अपने पास बुला लो, मेरे आंसू पोंछ दो। मैं तुम्हारी गोद में सर रखकर सोना चाहता हूं, तुमसे लिपटना चाहता हूं। तुम नहीं हो तो, मैंने ड्राइंग की कॉपी में रंग भरना छोड़ दिया है। अक्सर गुस्सा हो जाता हूं। खाना भी नहीं खाता हूं। मेरा घर तो तेरी बाहें है...मां... दोनों हाथ फैलाकर बुला लो मां...

12 साल के बच्चे की इस पीड़ा भरी ममता की पुकार ने देश के सर्वोच्च न्यायालय को अपना फैसला बदलने के लिए बाध्य कर दिया। खुली अदालत में सुनवाई के बाद न्यायालय ने बच्चे को फिर से उसकी मां को सौंप दिया। मामला यह था कि केरल के एक दंपति ने साल 2011 में शादी की थी। वर्ष 2012 में उनको बेटा हुआ। लेकिन पति-पत्नी में अलगाव हो गया। कोर्ट ने बच्चे की कस्टडी मां को दे दी। बच्चे की मां ने साल 2016 में दूसरी शादी कर ली। उसके दूसरे पति के पहले से ही दो बच्चे थे। इसके बावजूद बच्चा अपनी मां के साथ खुश था। लेकिन बात तब बिगड़ी जब बच्चे के पहले पिता ने अदालत में उसकी कस्टडी की गुहार लगाई। बच्चे के पिता का कहना था कि उसे साल 2019 तक अपने बेटे के बारे में कुछ पता नहीं था। अचानक बच्चे की मां ने कुछ कागजातों के लिए उन्हें फोन किया। वह अपने दूसरे पति और बच्चों के साथ मलेशिया जाने वाली थी। लेकिन पिता को फैमिली कोर्ट से कोई मदद नहीं मिली। इस पर उसने हाई कोर्ट में अपील की। हाईकोर्ट ने बच्चे की कस्टडी पिता को सौंप दी। बच्चा अपने पिता के पास आ गया। मां ने इस आदेश के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में गुहार लगाई, लेकिन 11 माह पहले सुप्रीम कोर्ट ने केरल उच्च न्यायालय के बच्चे की कस्टडी मां से जैविक पिता को सौंपने का फैसला बरकरार रखा। इसके पीछे कोर्ट का मानना था कि विदेश जाने से बच्चे का स्थिर जीवन अस्त-व्यस्त हो जाएगा। उधर बच्चा अपने जैविक पिता के पास असहज और असमान्य परिस्थितियों का सामना कर रहा था। इसे देखते हुए मां ने सुप्रीम कोर्ट से फैसले की समीक्षा की मांग करते हुए कहा कि बच्चा अपने पिता को बहुत कम जानता है। वह कभी-कभार ही उससे मिले हैं। बच्चे पर न्यायालय के फैसले का गहरा असर पड़ा है। वह चिंता और भय में जी रहा है। मां ने क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, वेल्लोर की मूल्यांकन रिपोर्टें भी सामने रखीं, जिनमें कहा गया था कि बच्चे को अपनी मां से दूर होने का डर है, इस कारण वह उदास और अनमना रहता है।

लेखक – प्रदीप तिवारी, एडवोकेट